

AV 1-2 Pure (2020 Edn)

स्वतन्त्र मन व इच्छा का परिणाम

The Consequences of Free Will and Mind

मूल हिन्दी-अंग्रेज़ी प्रवचन, १६ अगस्त १९७८, प्रातःकाल, पटना⁽¹⁾
Original Hindi-English Discourse, 16 August 1978, morning, Patna

[पशु] सहजात वृत्ति के द्वारा प्रेषित होकर काम करता है, और मनुष्य अपनी इच्छा-शक्ति से, मनः शक्ति से काम करता है। कोई मनुष्य अगर सहजात वृत्ति के द्वारा प्रेषित होकर काम करते हैं, तो वे पशु के समान हो गए।

Worse than an animal: The fundamental difference between man and animal is that whatever an animal does, it does as per rules of Parama Puruṣa, according to its inborn instincts. But whatever a man does, he does by his willpower and mental force. If a man is guided by the inborn instincts or goaded by base propensities, then he is no better than an animal. I say he is worse than an animal because an animal lacks a developed mind, but man has a developed mind. So if he doesn't utilize his mind, he is worse than an animal.

तो, 'मनो करोति कर्माणि मनो लिप्यते पातकैः'⁽²⁾। और, पातक में लिप्त भी होता है यही मन। मनुष्य में आज़ादी है मन से काम करने की, पशु में नहीं है इसलिए पशु कभी पाप नहीं करता है, पाप करता है मनुष्य। पशु की कभी अधोगति नहीं होती है, पशु की क्रमशः प्रतिसञ्चर-धारा में उन्नति होती रहती है। किन्तु मनुष्य की आज़ादी रहने के कारण, वे अगर पातक में लिप्त होते हैं, तो उनकी अधोगति होती है, इसलिए कहा गया 'मनः लिप्यते पातकैः'।

¹ प्रवचन के प्रारम्भ की ध्वनि का कुछ अंश उपलब्ध नहीं है।—सं०

² ज्ञानसङ्कलिनी तन्त्र ४५—सं०

Because of this individual liberty, that is, mental liberty, man may do something good; he may do something bad. He may move along the path of *pratisaṅcara*; he may move along the path of negative *pratisaṅcara*.

What is *pātaka*? *Pātaka* means “doing against the cardinal human principles”. पातक क्या है ?

पातक :- मौल मानविक विधान के खिलाफ़ जाना ही पातक है । मौल मानविक विधान के खिलाफ़ जाना पातक तो है ही, पातक भी दो प्रकार के होते हैं ।

[अ] जो काम नहीं करना चाहिए, ऐसा काम अगर किया गया तो उसको कहते हैं ‘पाप’ ।

[ब] और, जो काम करना चाहिए मगर नहीं किया गया, उसको कहते हैं ‘प्रत्यवाय’ । पाप और प्रत्यवाय, दोनों का मिलित नाम है पातक ।

Pātaka: Pāpa and Pratyavāya

What is *pātaka*? If one does something against the cardinal human principles, then it is called—*pātaka*. And in *pātaka* there are two different branches. One is *pāpa*, and another is *pratyavāya*. *Pāpa* means “doing what you should not have done”. To do what you should not have done is called *pāpa*. And not to do what you should have done is called *pratyavāya*. The collective name for *pāpa* and *pratyavāya* is *pātaka*.

इसलिए जब तुम लोग जो कुछ भी करते हो, होशियारी से करना है । क्यों ? नहीं तो पातक हो जा सकता है, पाप या प्रत्यवाय हो जा सकता है । तुम्हें सतर्क रहना चाहिए । मगर मनुष्य कितना सतर्क रहेंगे जी । उतना विचार करके हर कर्म करना बहुत मुश्किल है । मगर विचार नहीं रहने से भी मुश्किल है—पातक हो जा सकता है, पाप या प्रत्यवाय हो जा सकता है । जैसे, चोरी

नहीं करनी चाहिए, किसी ने चोरी की तो पाप । और, बेसहारा मनुष्य को मदद करनी चाहिए, किसी ने नहीं किया (करना चाहिए, नहीं किया), तो प्रत्यवाय ।

तो मनुष्य इतना विचार कहाँ तक करेगा ? इसलिए कहा गया क्या ? ‘मनश्च तन्मना भूत्वा न पुण्यैः न च पातकैः’ । तो, कर्म करते वक्त, क्या पाप है, क्या प्रत्यवाय है, इतना विचार नहीं करके, अच्छा क्या है ?

सबसे सीधा उपाय :- कर्म करते वक्त, कर्म को ही परमात्मा समझ लो । ‘मनश्च तन्मना भूत्वा’ । मन को उन्हीं में लिप्त रखो, तब ‘न पुण्यैः न च पातकैः’ । तब पुण्य और पातक, पाप-पुण्य कुछ भी नहीं रहेगा । यही बुद्धिमान का काम है । तो, बुद्धिमान का काम क्या है ? हमेशा हर वक्त उनको याद रखना । उसी से वे पाप से भी बच जाएँगे, प्रत्यवाय से भी बच जाएँगे, हर बन्धन से बच जाएँगे । वे ही मुक्तपुरुष बन जाएँगे । तो, मुक्ति पाने का तो यही है सबसे सीधा उपाय ।

Ascription of Godhood and salvation: Now, while doing something, you will have to select your mental object very carefully. Otherwise, there may be *pāpa*, and there is every chance of *pratyavāya*. So what the wise man is to do? Whatever he is doing, he is to ascribe Godhood to that work, to that object. That ascription of Godhood to your work will save you from the bondages of *pāpa* and *pratyavāya*, from the bondages of “sins”. And that is the best policy. And if He, that is, the Supreme Entity, becomes your object,⁽¹⁾ then the natural rule is that you

¹ Ānanda Mārga ideology says, “You know, everything is the object of Parama Puruṣa. Parama Puruṣa is the Supreme Subject, Supreme Subjectivity. He cannot be the object. He sees everything. He is the subject, and the entire universe is the object; but, Parama Puruṣa Himself teaches the microcosm, the human beings, to make Him his object. That is, in the case of *sādhana*, during *sādhana* [*īśvara Prañidhāna*], the *sādhaka* becomes the subject and Parama Puruṣa becomes the object.” PS purport, PS #0041, MGD, 2nd January 1983, NP, Ānanda Nagar. — Eds.

will take the shape, and form, and qualities of your object. When the Parama Puruṣa is your object [of ideation], when the ideation is on Him, when the ascription is [of] Him,⁽¹⁾ then what will be the result? One day you will become one with Him; you will attain salvation.

कल्याणमस्तु ।

Original Hindi-English Discourse, 16 August 1978, morning, Patna
मूल हिन्दी-अंग्रेज़ी प्रवचन, १६ अगस्त १९७८, प्रातःकाल, पटना

“भक्ति-विहीन मनुष्य [जड़] ज्ञान की चर्चा कर रहे हैं; लोग कहते हैं ‘बड़े [जड़] ज्ञानी हैं, खूब जानते हैं।’ तो [जड़] ज्ञानी से कुछ होगा ? नहीं होगा । क्यों नहीं होगा ? यह परमार्थ-विहीन ज्ञान, यह तो एकदम जड़ ज्ञान है । और, जड़ ज्ञान भी आखिर तक मनुष्य को जड़ बना देगा, और कुछ नहीं—जड़-दर्शन जैसे मनुष्य को जड़ बना देता है । Last एक century में इस तरह के दर्शन के कारण मनुष्य-समाज का सर्वनाश हो गया । मनुष्य जड़ता की ओर गए, materialism की ओर अधिक झुके, सही बात उन्हें मालूम नहीं हो सकी । अब, मानवता को इस खतरनाक जड़-दर्शन से बचाना है—लोग ज्ञान समझ लिए इसी को । यह ज्ञान नहीं है, यह [जड़] ज्ञान का जञ्जाल है ।”

— आ.व. (वि.) १-२, ‘प्रभु-प्रेम बिना कर्म, ज्ञान, तप, सब व्यर्थ’

¹ In *Ishvara Prañidhāna* and *Brahmacarya*, Parama Puruṣa is the object of the *sādhaka*. —Eds.